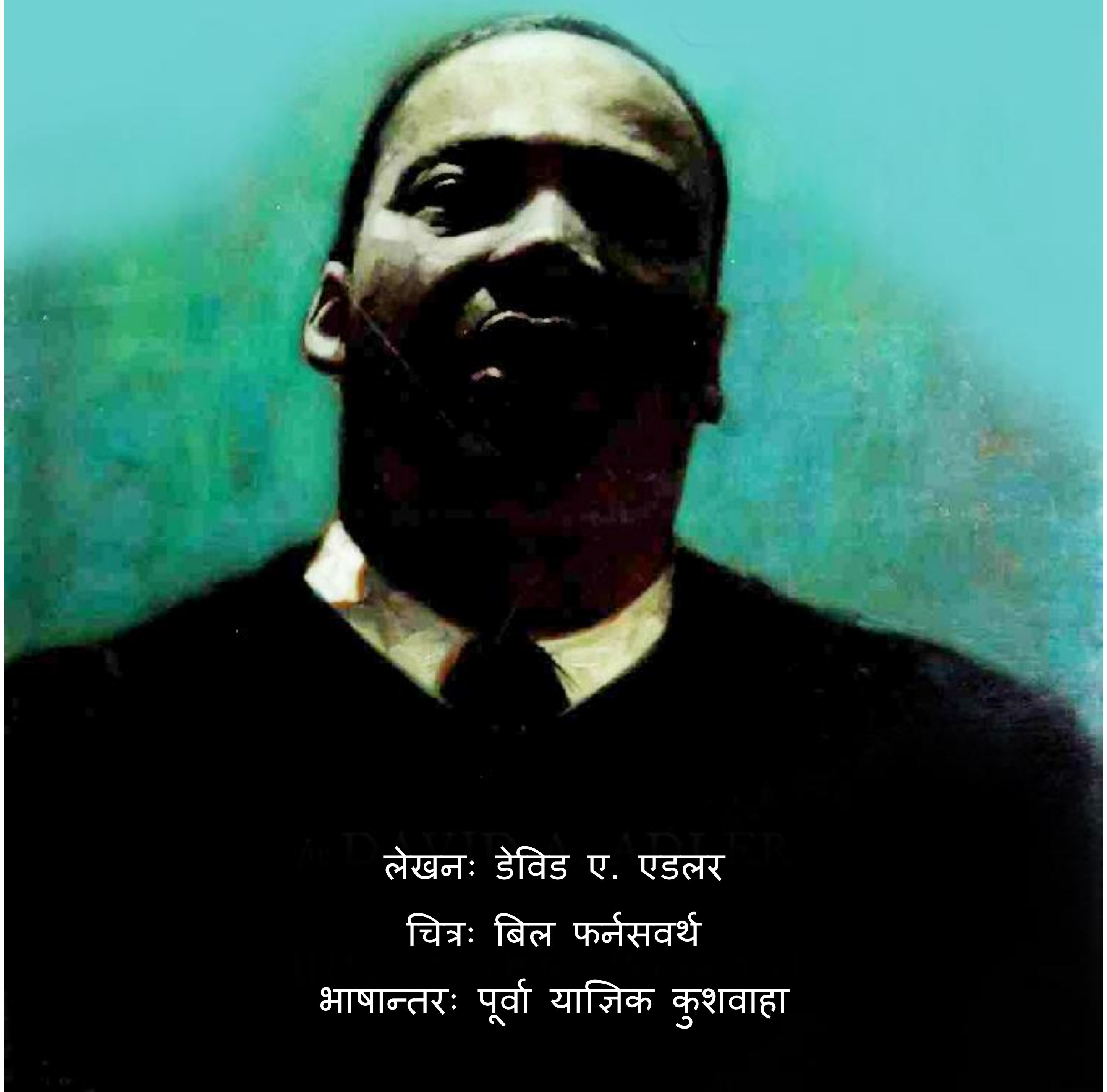
नागरिक अधिकारों के नायक



लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः बिल फर्नसवर्थ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

द लिटिल रॉक हाईस्कूल के नौ छात्रों ने पृथक्करण का विरोध किया। थरगुड मार्शल ने, जो अमरीका की सर्वोच्च अदालत के पहले अफ्रीकी-अमरीकी मुख्य न्यायाधीश थे, 'पृथक पर समान' के सिद्धान्त का विरोध किया। फैनी लू हेमर, अफ्रीकी-अमरीकियों के मत देने के अधिकारों की संरक्षिका थीं। डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर, ने अहिंसक विरोध का उपयोग कर दुनिया ही बदल दी।

बात चाहे बहिष्कारों व जुलूसों का नेतृत्व करने की हो, या नए कानूनों के लिए दबाव बनाने की, इस पुस्तक में शामिल स्त्री-पुरुष नागरिक अधिकार आन्दोलन के नायक थे। डेविड ए. एडलर की मनोहारी जीवनियाँ तथा बिल फर्नसवर्थ के मोहक चित्रों ने इन व्यक्तित्वों के जोश और जुनून को समेट कर वास्तविक 'समानता' की दिशा में ले जाने के इन लोगों के प्रेरणादायक संघर्षों को खूबसूरती से प्रस्तुत किया है।

नागरिक अधिकारों के नायक

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः बिल फर्नसवर्थ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



परिचय

अमरीकी संविधान के तेरहवें संशोधन ने, जो 1865 में पारित किया गया था, अमरीका में गुलामी को समाप्त कर दिया। पर इसे पारित करने के बावजूद अफ्रीकी-अमरीकियों को वास्तविक समानता नहीं मिली। राज्यों ने काले और गोरों को पृथक रखने वाले 'जिम क्रो' कानून पारित किए। यह नाम 'मिन्स्ट्रल शो' के एक चरित्र के नाम पर रखा गया जो कालों को बेवकूफ लोगों की तरह दर्शाता था।

1892 में होमर प्लेसी ने, जिनकी दादी अफ्रीकी-अमरीकी थीं, इन कानूनों को चुनौती देने की ठानी। वे केवल गोरों वाले डब्बे में चढ़े और कन्डक्टर से कहा कि वे काले हैं। होमर प्लेसी को जेल में बन्द कर दिया और उनका मामला सर्वोच्च अदालत तक पहुँचा। अदालत ने फैसला सुनाया कि "केवल गारों" और "केवल कालों" की अलग-अलग व्यवस्था "पृथक पर समान" सुविधाओं के तहत वैध है। यह फैसला कालों और गोरों के लिए पृथक स्कूलों, रेलगाड़ियों में अलग-अलग डब्बों, अलग फोन बूथों, एम्बुलैंसों, प्रसाधन कक्षों, बसों, अस्पतालों और सिनेमाघरों में पृथक हिस्सों की ओर ले गया। कालों के सामने केवल ये बाधाएं ही नहीं थीं। कई राज्यों में मत देने के पहले 'अनिवार्य साक्षरता परीक्षाएं' व 'चुनाव कर' भी अफ्रीकी-अमरिकियों को वोट देने के आड़े आते थे।

1910 में नैशनल एसोसिएशन फॉर द एडवान्समेंट ऑफ कलर्ड पीपल (एनएएसीपी), का गठन हुआ जिससे पृथक्करण के विरुद्ध एक लम्बा संघर्ष आरंभ हुआ। इस संघर्ष में कई हारें और कुछ जीतें भी शामिल थीं। 1954 में ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एज्युकेशन के युगान्तकारी मामले में अमरीका की सबसे बड़ी अदालत ने कहा कि जो सार्वजनिक सेवाएं पृथक हों, वे समान नहीं हो सकतीं। इन सेवाओं को पृथक करने का अर्थ होगा उन्हें असमान घोषित करना। इस फैसले के बाद भी अलगाववाद जारी रहा। इस पुस्तक में जिन साहसी लोगों का परिचय दिया जा रहा है, वे 1954 के फैसले के बाद अहिंसक तरीकों से सभी अमरीकी नागरिकों के नागरिक अधिकारों के लिए लड़ने वाले लोगों में से कुछ हैं।

मेरे चचेरे बहन-भाई, लीआ व मार्क एडलर के लिए - डी.ए.ए.

रेगीना को - बी.एफ.

अनुक्रम



राल्फ एबरनैथी

(1926-1990)

1955 के सोमवार, 5 दिसम्बर की सुबह-सुबह रैवरैंड राल्फ एबरनैथी ने, मोंटेगोमरी, अलबामा स्थित अपने घर से पहली सार्वजनिक बस को निकलते देखा। "उसमें कोई सवारियाँ नहीं थीं," एबरनैथी ने बाद में याद करते हुए बताया। "बॉयकॉट (बहिष्कार) कारगर था, वह पूरी तरह लागू किया जा रहा था।"

बसों के बहिष्कार का आयोजन एबरनैथी, डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर व अन्य लोगों ने किया था। यह सार्वजनिक बसों में पृथक्करण की व्यवस्था के विरोध करने के लिए था। वे बस कम्पनी को बता देना चाहते थे कि वे अफ्रीकी-अमरीकियों के साथ दोयम दर्जे के नागरिकों का-सा व्यवहार अब नहीं सहेंगे। यह बहिष्कार साल भर से भी अधिक समय तक चला, तब जा कर नागरिक अधिकार आन्दोलन को पहले शुरुआती जीत हासिल हो सकी। इस आन्दोलन ने अहिंसात्मक विरोध की ताकत की पुष्टि की।

एबरनैथी ने अफ्रीकी-अमरीकियों के मत देने के अधिकार पाने और उनके साथ न्यायोचित बरताव हासिल करने के लिए सेलमा, बर्मिंघम, अलाबामा, एल्बनी, जॉर्जिया, तथा वॉशिंगटन डी.सी. में जुलूसों का नेतृत्व किया। "हम अपनी रफ्तार कम नहीं करेंगे; हम पीछे नहीं हटेंगे," उन्होंने 1960 में कहा। "हम घृणा, कड़वाहट, या हिंसा नहीं अपनाएंगे . . .। हमारा लक्ष्य हैः अव्वल दर्जे की नागरिकता हासिल करना। हमारी विधि हैः प्रेम और अहिंसा। हमें अभी आज़ादी चाहिए. . . हमें खुद को पीड़ा सहने के लिए तैयार करना होगा। हो सकता है कि हम में से कुछ को अपनी जान तक देनी पड़े।"

अपने मित्र डॉ. किंग के साथ एबरनैथी ने नागरिक अधिकार आन्दोलन का गठन किया। जिस समय डॉ. किंग की गोली मार कर हत्या की गई, वे उनके साथ थे। इसके बाद एबरनैथी ने उनका काम जारी रखा। "आप सपना देखने वाले को मार सकते हो," उन्होंने कहा, "पर सपने को नहीं!"

मेडगर एवर्स

(1925-1963)

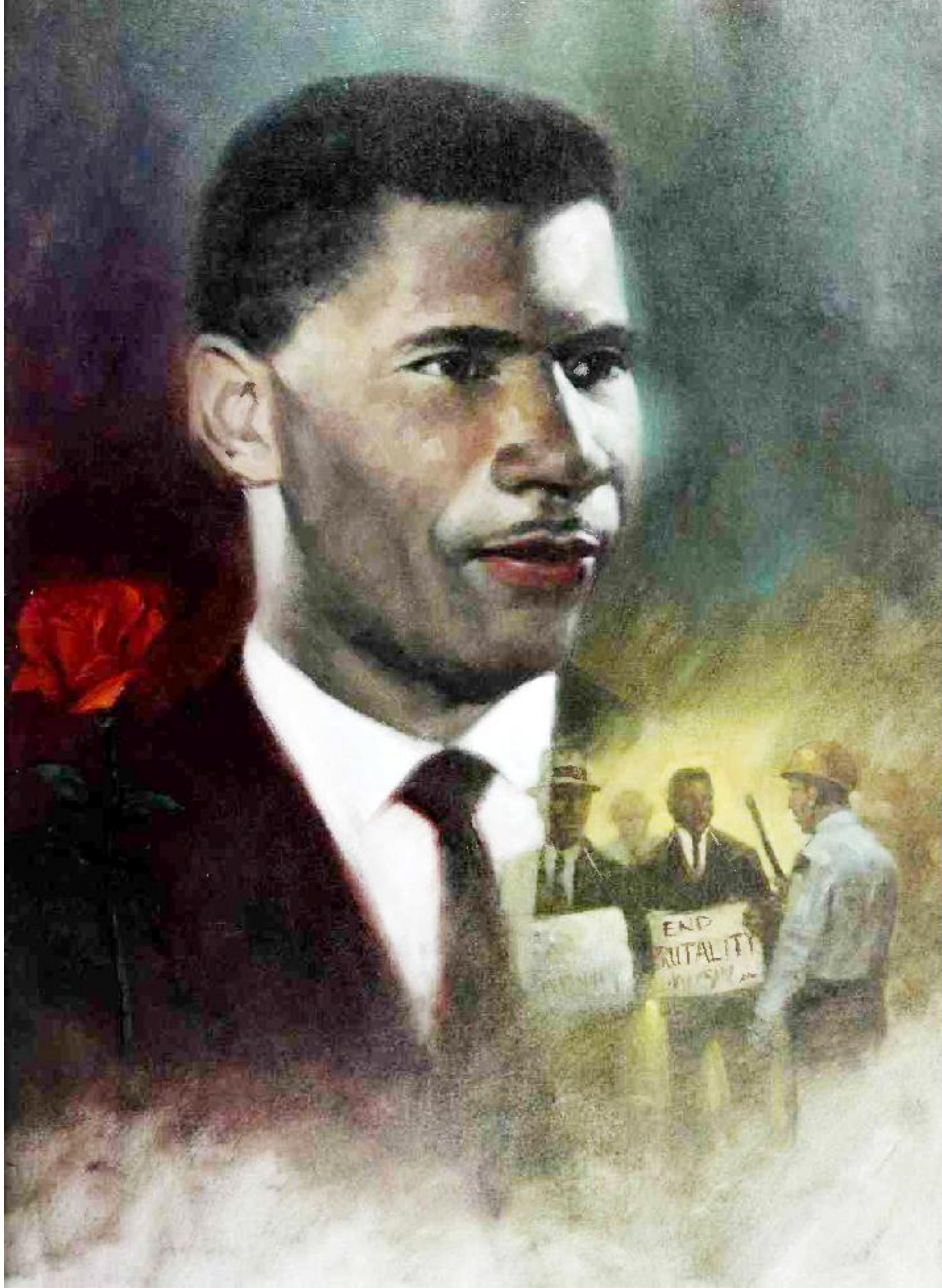
“जब मैं पहली कक्षा में था, गोरे बच्चे अपनी स्कूल बसों से हम पर चीज़ें फेंका करते थे,” मेडगर एवर्स ने 1962 में कहा था। “जब मैं ग्यारह-बारह साल का था, हमारे परिवार के एक मित्र को गोरों की उग्र भीड़ ने मार डाला था . . . मैं सोचने लगा कि मैं यह सब कब तक झेल सकूंगा।”

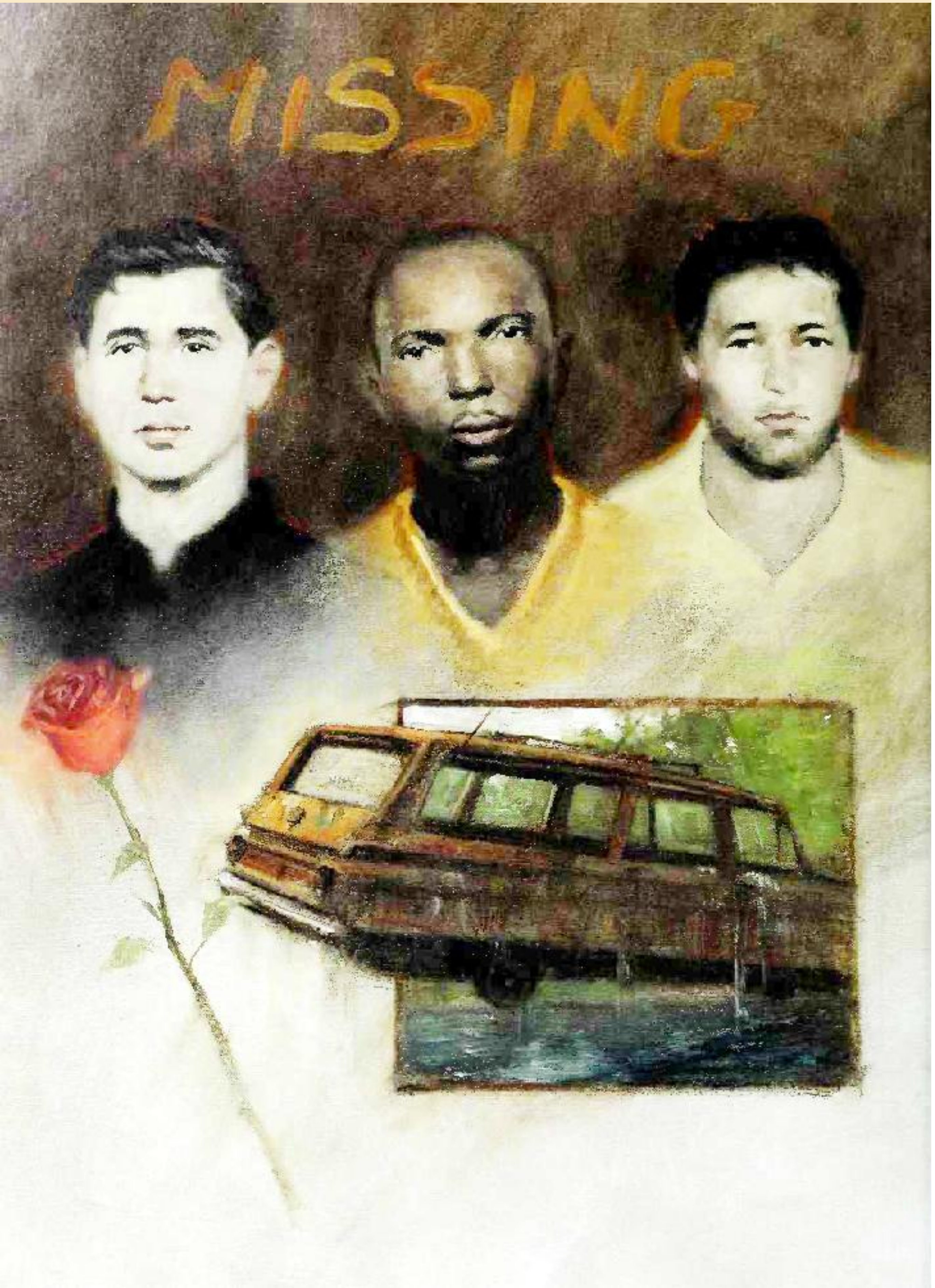
एवर्स द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध में अमरीकी सैनिक रहे थे। उन्होंने फ्रांस, और जर्मनी में अपनी सेवाएं दीं। पर जब वे 1946 में मिसिसिपी में अपने घर लौटे, उन्होंने और अन्य अफ्रीकी-अमरीकियों ने सुना कि उन्हें मत देने का अधिकार नहीं होगा। एवर्स ने बाद में कहा, “हमें कहा गया कि चुनाव के दिन हमें शहर में नहीं आना है।” पर एवर्स और कुछ दूसरे फिर भी गए। “तकरीबन पंद्रह-बीस गोरे पुरुष जो छुरियों और बन्दूकों से लैस थे, हमारे लिए तैयार थे . . . अब जब हमें जर्मनों और जापानी सैनिक नहीं मार सके थे, लग यह रहा था कि गोरे मिसिसिपीवासी ही हमारी हत्या कर डालेंगे।”

एवर्स बेहद नाराज़ हुए। वे एनएएसीपी की मिसिसिपी शाखा के नेता बने, उन्होंने बैठकों, जुलूसों और बहिष्कारों का नेतृत्व कर अफ्रीकी-अमरीकियों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया; मिसिसिपी के स्कूलों को एकीकृत करने के लिए संघर्ष किया। बदलाव लाने के लिए किए गए उनके प्रयासों के जवाब में उन्हें धमकियाँ और हिंसा झेलनी पड़ी। एवर्स के घर को जला दिया गया। उन्हें पीटा और भगाया गया।

12 जून 1963, को एवर्स गिरजे से अपने घर लौट रहे थे। उस वक़्त एक छिपे बन्दूकधारी ने उन्हें गोली मारी और भाग गया। एवर्स अपने ही घर के दरवाज़े के सामने गिरे और कुछ ही समय में उनकी मौत हो गई।

राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी ने एवर्स की पत्नी मार्ली को इस हादसे के बाद जो पत्र लिखा उसमें कहा कि “शायद इस अहसास से आपको कुछ सांत्वना मिले कि जिस कार्य के लिए आपके पति ने अपने प्राण न्यौछावर किए वह न्यायोचित था।”





एंड्रू गुडमैन (1943-1964)
जेम्स अर्ल चेनी (1943-1964)
माइकल हैनरी स्वैरनर (1939- 1964)

1960 के दशक की शुरुआत में अमरीका के दक्षिणी राज्यों में बहुत ही कम अफ्रीकी-अमरीकी मत डाल सकते थे। अन्यायपूर्ण कानून और धमकियाँ उन्हें चुनावों में हिस्सेदारी से दूर रखते थे। जून 1964 में मिसिसिपी के कई नागरिक अधिकार समूहों ने 'फ्रीडम समर' नाम से राज्य भर में एक अभियान शुरू किया, ताकि अफ्रीकी-अमरीकी मत देने के लिए अपना पंजीकरण करवाएं। सैकड़ों लोग, जिनमें उत्तर-पूर्व के कई गोरे कॉलेज छात्र भी थे, इस अभियान से जुड़े।

जैकसन, मिसिसिपी के गोरे मेयर ने कहा कि, "हम उनके लिए तैयार रहेंगे।

20 जून को स्वयंसेवकों का एक जत्था मिसिसिपी पहुँचा। अगले ही दिन उनमें से एक, न्यू यॉर्क से आया छात्र एन्ड्रू गुडमैन, दो नागरिक अधिकार र्काकर्ताओं, जेम्स चेनी व माइकल स्वैरनर के साथ लापता हो गया।

मामले की तहकीकात करने एफबीआई के ऐजेंट भेजे गए। 4 अगस्त को, यानी उनके लापता होने के 44 दिनों बाद उनकी लाशें एक स्टेशन वैगन में मिलीं। तीनों को एक-एक गोली मारी गई थी। जेम्स चेनी को, जो काला था, उसे बुरी तरह पीटा भी गया था।

"इस मुकाम पर खड़े हो मैं इस घटना के लिए केवल उन लोगों को दोष नहीं देता जिन्होंने गोलियाँ चलाईं," नागरिक अधिकार कार्यकर्ता डेविड डैनिस ने चेनी के अंतिम स्स्कार के वक़्त कहा। डेविड ने स्थानीय और राष्ट्रीय नेताओं को भी ज़िम्मेदार ठहराया, जिन्होंने पृथक्करण को अब तक भी जारी रहने दिया था। "अगर सौ साल पहले उचित कदम उठाए गए होते," उन्होंने कहा, हम आज एक साहसी युवक, जेम्स चेनी की मौत का शोक नहीं मना रहे होते।"

शैरिफ तथा उप-शैरिफ समेत 21 लोगों को इन हत्याओं के लिए गिरफ्तार किया गया। पर ये आरोप जल्द ही हटा दिए गए और बाद में उनमें से छह को साधारण आरोपों के लिए जेल हुई।

ग्रीनस्बरो चौकड़ी

एजैल ब्लेयर, जूनियर (अब जिब्रील ख़ाज़ान - 1941 -)

फ्रैंकलिन मैक्केन (1941-2014)

जोसेफ मैकनील (1941-2025) तथा

डेविड रिचमण्ड (1941-1990)

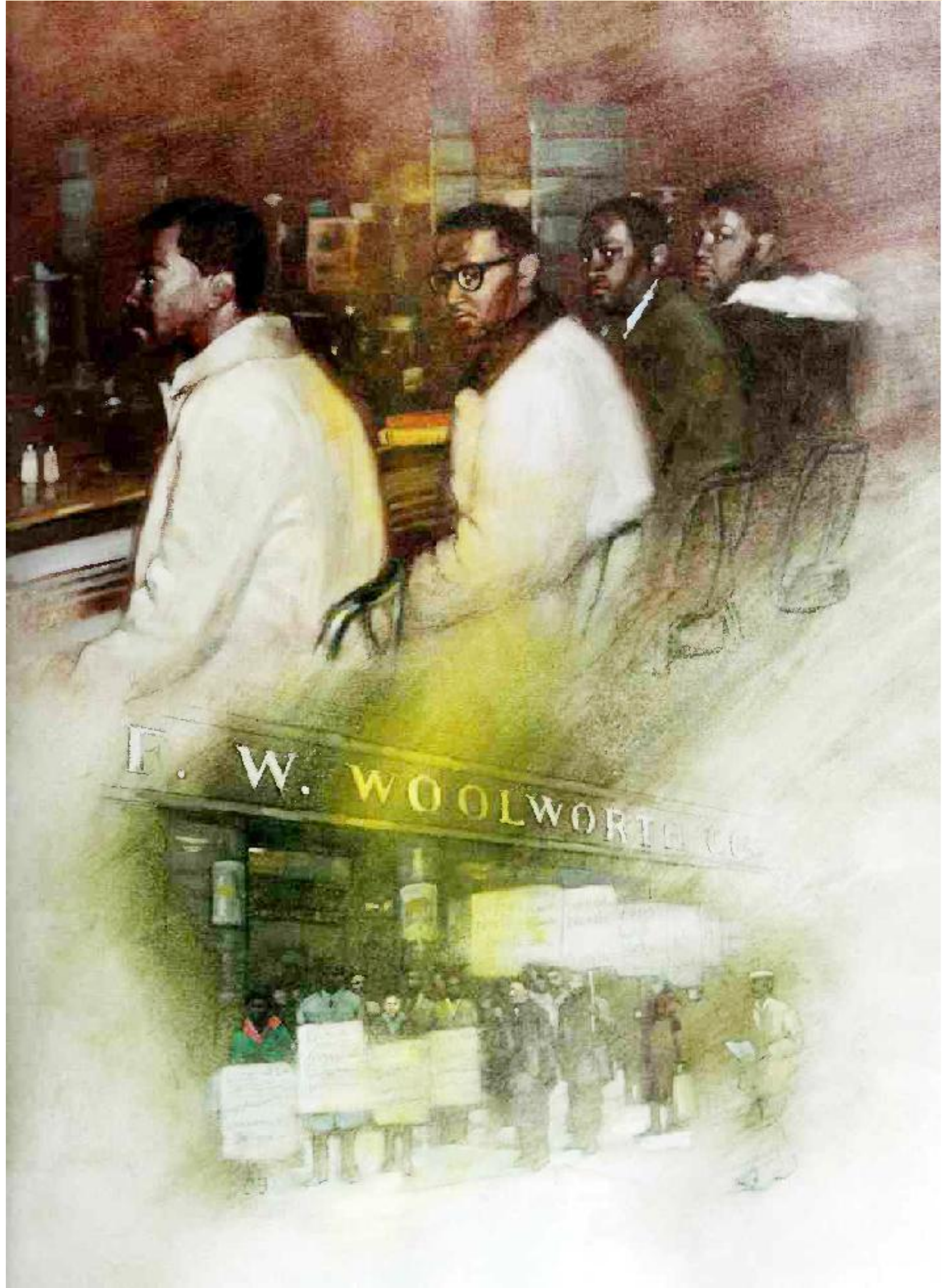
1 फरवरी 1960 को ग्रीनस्बरो, उत्तरी कैरोलाइना के केवल कालों के कॉलेज के चार प्रथम वर्ष के छात्र शहर के एफ. डब्ल्यू. वुलवर्थ की दुकान में गए। जोसेफ और फ्रैंकलिन ने दंतमंजन और कॉलेज की ज़रूरी चीज़ें खरीदीं और इसके बाद अपने दोस्त एज़ेल ब्लेयर और डेविड रिचमण्ड के साथ दुकान के लंच काउन्टर पर बैठे और खाना मांगा। वहाँ की गोरी सेविका ने कहा कि हम यहाँ कालों को सेवाएं नहीं देते हैं।

"ऐसा क्यों है कि आप एक काउन्टर (बिक्री काउन्टर) पर सेवाएं देते हैं, पर दूसरे पर नहीं," मैक्केन ने जानना चाहा।

मैक्केन के सवाल का कोई तार्किक जवाब तो था ही नहीं। चारों छात्र दुकान बन्द होने तक वहीं डटे रहे। जब वे वहाँ बैठे थे, एक गोरी वृद्ध महिला ने उन्हें समर्थन दिया। तब उन्होंने मैक्केन से कहा, "मुझे कुछ निराशा है कि आप लोगों को इस भेदभाव का विरोध करने में इतना समय लगा।"

यह शान्तिपूर्ण विरोध तेज़ी से फैला। देश के कई शहरों में लंच काउन्टरों पर भी इसी तरह धरने दिए गए। विरोध करने वाले इन युवाओं को अपमानित किया गया, उन्हें भद्दी गालियाँ दी गईं, उन पर थूका और मारा गया। लोगों ने उनके मुँह पर सिगरेट का धुआँ फूंका, उनकी पीठों पर सिगरेटें बुझाईं, उन पर सोडा और कैचअप उडेला, उनकी कुर्सियाँ खींच उन्हें नीचे गिराया। पर छात्रों ने कभी पलट कर उन पर हमला नहीं किया। नैशविल, टैनेसी में जैसे ही पुलिस ने धरने पर बैठे अस्सी छात्रों को गिरफ्तार किया, दूसरे अस्सी छात्रों ने उनकी जगह ले ली। जब इन दूसरे अस्सी छात्रों को भी गिरफ्तार कर लिया गया, अस्सी छात्रों का तीसरा समूह आ बैठा।

"मुझे लगा कि मैं अचानक सचमें वयस्क बन गया हूँ," मैक्केन ने धरनों के बारे में कहा, "मैंने न केवल वयस्कता पाई बल्की मुझमें उसके प्रति आदर भी पैदा हुआ।" उसे और अन्य छात्रों को जीत भी हासिल हुई। 1960 की मार्च में चार अफ्रीकी-अमरीकियों को नैशविल बस टर्मिनल के पहले के "केवल गोरों के लिए" लंच काउन्टर पर खाना परोसा गया। गर्मियों के आने तक ग्रीनस्बरो में भी अफ्रीकी-अमरीकियों को केवल गोरों के काउन्टरों पर खाना परोसा जाने लगा।





फैनी लू हेमर

(1917-1977)

“आप अपनी समस्याओं से भाग नहीं सकते,” फैनी लू हेमर ने 1964 में कहा था। “आप सिर्फ उनका सामना ही कर सकते हैं।”

फैनी का जन्म और उनकी परवरिश मिसिसिपी में हुई थी। वे अपने माता-पिता की बीस सन्तानों में सबसे छोटी थीं। 1962 में उन्होंने पहले नागरिक अधिकार आन्दोलन में भाग लिया। उन्होंने बाद में कहा कि “इन्सानों की के रूप में हमारा अधिकार है कि हम मत देने के लिए अपना पंजीकरण करवाएं। मुझे पता ही नहीं था कि हम मत दे भी सकते हैं। यह बात किसीने हमें कभी बताई ही नहीं थी।”

पता चलने के अगले ही दिन अन्य 17 साथियों के साथ फैनी ने अपना पंजीकरण करवाने की कोशिश की। पर उन्हें लौटा दिया गया। पुलिस ने उन्हें इस बहाने गिरफ्तार कर लिया कि उनकी बस ज़रूरत से ज़्यादा पीली थी।

जब फैनी नागरिक अधिकार आन्दोलन में सक्रिय हुईं, फैनी की नौकरी और घर फ़ौरन छिन गए। फैनी ने बार-बार पूछा।, “क्या यह सचमें अमरीका है?” उन्होंने इसके बावजूद अपना संघर्ष जारी रखा। उन्हें गालियाँ दी गईं, पीटा गया, उन पर गोली दागी गई। उन्होंने फिर पूछा “क्या यह अमरीका है?”

क्योंकि डैमोक्रैटिक दल के राष्ट्रीय अधिवेशन में मिसिसिपी का प्रतिनिधि मंडल पूरी तरह गोरों का था, वह राज्य के कालों को प्रतिनिधित्व नहीं करता था। हेमर ने मिसिसिपी फ्रीडम डैमोक्रैटिक पार्टी (एमएफडीपी) के गठन में मदद की। 1964 के डैमोक्रैटिक अधिवेशन में एमएफडीपी तथा मिसिसिपी के गोरे प्रतिनिधियों, दोनों ने ही उस समाधान को अस्वीकार किया जिसमें फ्रीडम पार्टी को दो सीटें दी जानी थीं। इसके बावजूद हेमर के जुनूनी भाषण को टेलिविज़न पर प्रसारित किया गया, जिससे मसले पर राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित हुआ। डैमोक्रैटिक पार्टी ने तय किया कि भावी अधिवेशनों में किसी भी प्रतिनिधि मंडल को तब स्वीकारा ही नहीं जाएगा अगर राज्य में नागरिकों को गैर-कानूनी तरीकों से मत देने से रोका गया हो। अगले वर्ष 1965 में मतदान अधिकार कानून पारित कर दिया गया।

हेमर ने कहा कि उन्हें उन लोगों पर दया आती है जिनके फैसले पूर्वाग्रहों से बाधित होते हैं। “मुझे उन लोगों के लिए दुख होता है, जो घृणा से लिपटे होते हैं,” हेमर ने कहा था। “घृणा न केवल हमारा विनाश करेगी, वह उनका भी विनाश करेगी।”



लिंडन बेन्स जॉनसन

(1908-1973)

टैक्सास के लिंडन बी. जॉनसन ने पहले अमरीका की प्रतिनिधि सभा में अपनी सेवाएं दीं, तब अमरीका की सीनेट में। उन्होंने इस प्रकार कांग्रेस में चौबीस वर्ष बिताए। 1960 में वे उप-राष्ट्रपति बने। 1963 में जॉन एफ. कैनेडी की हत्या के बाद वे राष्ट्रपति बने।

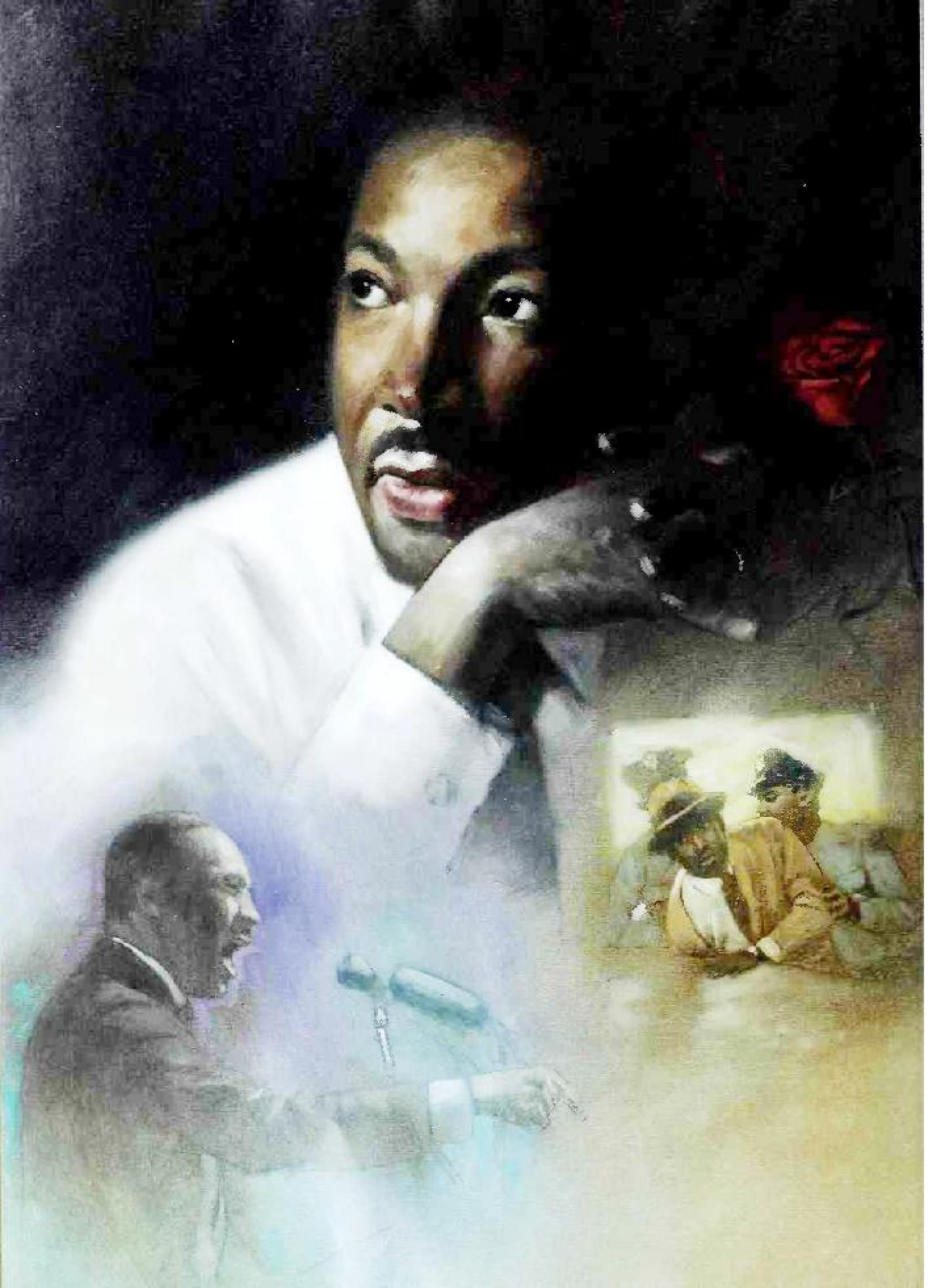
''मैं ऐसा राष्ट्रपति बनना चाहता हूँ,'' जॉनसन ने 1965 में कहा, ''जो हरेक चुनाव में हरेक नागरिक के मत देने के अधिकार की रक्षा करे। जो सभी लोगों में घृणा के भाव को समाप्त करने में मदद करे, और जो सभी नस्लों, सभी इलाकों, व दलों के लोगों में प्रेम को बढ़ाए।''

कई अर्थों में लिंडन बी. जॉनसन सच में ऐसे ही राष्ट्रपति बन सके।

कांग्रेस के तौर-तरीकों की समझ के कारण वे 1964 में एक नागरिक अधिकार कानून को पारित करवा सके, जिसने कार्यस्थलों, चनावों, होटलों तथा सार्वजनिक स्थानों में भेदभाव को गैर-कानूनी बनाया।

इसके अगले ही वर्ष उन्होंने मतदान अधिकार कानून, 1965, को पारित करवाया। ''उनके सशक्त नेतृत्व ने,'' सिनेटर एडवर्ड कैनेडी ने इन कानूनों के बारे में कहा, ''नागरिक अधिकारों के इतिहास में उन्हें अब्राहम लिंकन के पास ला खड़ा किया।''

''उन्होंने समानता के शब्दों को केवल मौखिक रूप से नहीं दोहराया,'' जस्टिस थरगुड मार्शल ने राष्ट्रपति जॉनसन के बारे में कहा, ''उन्होंने उन्हें कर्म में उतारा।"



मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

(1929-1968)

डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने अपना जीवन नागरिक अधिकार आन्दोलन को सपर्पित कर दिया। उन्होंने अमरीका के अपने सपने को साकार करने के लिए अथक कार्य किए। उनका सपना था कि किसी दिन अमरीका पूर्वाग्रहों और कट्टरता से मुक्त होगा और वहाँ सभी नस्लों के लोगों को समान अवसर मिल सकेंगे। नागरिक अधिकार अन्दोलन में नेतृत्व की उनकी पहली भूमिका, मोंटेगोमरी के बस बहिष्कार ने उनके इस विश्वास को जाँचा, कि बदलाव बिना हिंसा के भी लाया जा सकता है। "हमें प्यार के हथियार का इस्तमाल करना चाहिए," उन्होंने अपने अनुयाइयों से कहा। "जो लोग हमसे घृणा करते हैं उनके प्रति हममें करुणा और समझ होनी चाहिए।"

किंग ने केवल गोरों के लिए पेय-जल नलकों, लंच काउन्टरों, प्रतीक्षालयों, तथा प्रसाधन सुविधाओं आदि के विरुद्ध शान्तिपूर्ण विरोधों का भी नेतृत्व किया। वे 1963 के विख्यात वॉशिंगटन जुलूस के भी नेता थे, जिसमें 250,000 लोगों ने नागरिक अधिकारों के लिए शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया था। इसी प्रदर्शन के दौरान उन्होंने पूर्वाग्रहहीन अमरीका के अपने सपने को साझा किया था।

किंग को धमकियाँ दी गईं, उन्हें लतियाया गया, छुरे से भोंका गया, गिरफ्तार कर जेल में डाला गया। उनके घर को बम से उड़ाया गया, उनके घर के सामने क्रूस जलाए गए। पर उन्होंने सत्य और प्रेम में अपनी आस्था कभी नहीं खोई।

1964 में डॉ. किंग को नोबेल शान्ति पुरस्कार से नवाज़ा गया। वे पश्चिमी दुनिया के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दिखा दिया कि संघर्ष अहिंसक भी हो सकता है। इस पुरस्कार को उन्होंने "उन सभी लोगों के नाम स्वीकार किया, जो शान्ति और भाईचारे से प्रेम करते हैं।"

मार्च 1968 में किंग मैम्फिस, टैनेसी गए, यह मांग करने की काले सफाई कर्मियों को भी उतना ही वेतन मिलना चाहिए जितना गोरों को दिया जाता है। यानी समान कार्य का वेतन सभी को समान मिले। 4 अप्रेल के दिन वे अपने मोटल के कमरे की बाल्कनी में खड़े हुए। अर्ल रे उनके पास ही के एक घर में एक खुली खिड़की के पास एक राइफल लिए खड़ा था। उसने डॉ. किंग पर गोली चलाई और उनकी हत्या कर डाली।

डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर आज़ादी, न्याय और अमरीकी मूल्यों की एक सशक्त आवाज़ थे, जिसे सदा के लिए मौन कर दिया गया।

"कहें कि मैं न्याय का नगाड़ची था," डॉ. किंग ने दो माह पहले एक समूह को संबोधित करते समय कहा था। "कहें कि मैं शान्ति का नगाड़ची था। मैं सत्य का नगाड़ची था।"

लिटिल रॉक के नौ

मिनिजीन ब्राउनर (1941 -), एलिज़ाबैथ ऐकफोर्ड (1941 -), अर्नेस्ट ग्रीन (1941 -), थेल्मा मदरशेड (1940 -), मेल्बा पैटिनो (1941 -), ग्लोरिया रे (1942 -), टैरेन्स रॉबर्टस (1941 -), जैफरसन थॉमस (1942 - 2010), कारलौटा वॉल्स (1942 -)

2 सितम्बर 1957 को लिटिल रॉक स्कूल, आर्कन्सॉ, के नए स्कूल वर्ष का पहला दिन था। उस दिन नौ अफ्रीकी-अमरीकी छात्राओं व छात्रों को सेंट्रल हाई स्कूल में समेकित किया जाना था।

"मुझे जो महसूस हो रहा था वह था, वह था शरीर को जकड़ देने वाला डर," मेल्बा पैटिलो ने, जो नौ नए काले छात्रों में एक थी, बाद में कहा। उस वक़्त वे केवल पंद्रह साल की थीं।

सामने गुस्से से भरे गोरों और नैशनल गार्डों की भीड़ थी। वे बन्दूकें, संगीन, और फुट भर लम्बी छड़ियाँ थामे थे। वे इन काले किशोरों को स्कूल भवन में घुसने से रोक रहे थे।

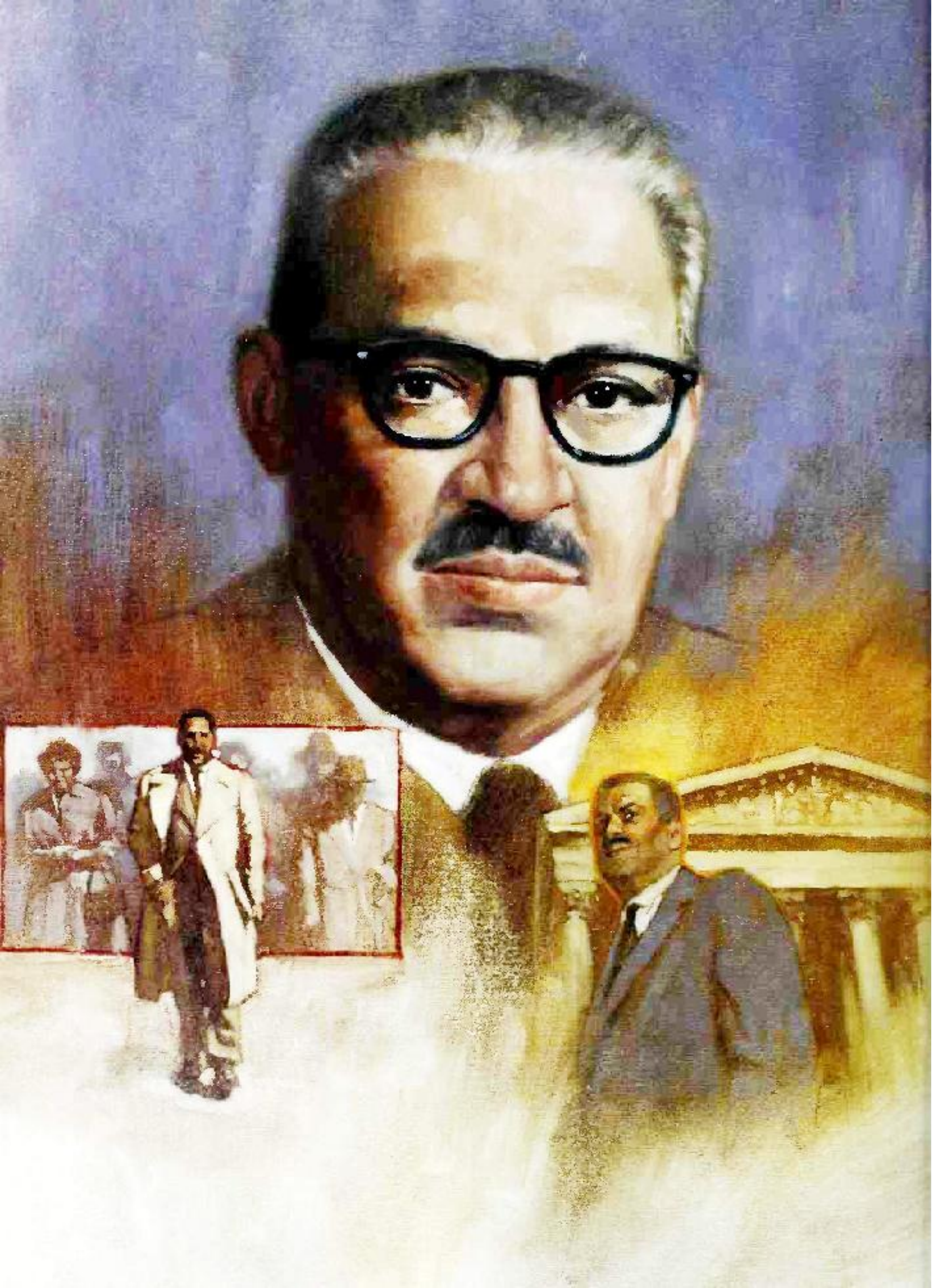
"मैं जिनसे घबराई," थेल्मा मदरशेड ने उस वक़्त कहा, "वे थे सैनिक। उन्होंने हमें स्कल में घुसने देने में मदद करने की कोई कोशिश नहीं की। वे हमारा रास्ता रोके खड़े थे।" पर उन्होंने तब यह भी जोड़ा, "हमने अब तक हथियार नहीं डाले हैं।"

"मामला एक सिद्धान्त का है," मदरशेड की माँ ने कहा। "अगर हमारे लड़के और लड़कियाँ गोरों के स्कूल में दाखिल होते हैं, तो बाद में आने वालों को मदद मिलेगी।"

तीन सप्ताह बाद संघीय सेना ने स्कूल को घेरा और तब जाकर सभी नौ काले छात्र-छात्राएं स्कूल में सुरक्षित घुस सके। मई 1958 में अर्नेस्ट ग्रीन उन नौ छात्रों में पहला छात्र था जिसने अपनी पढ़ाई पूरी की। ग्रीन ने बाद में कहा, "इसने देश के अन्य काले लोगों की आँखें इस तथ्य के प्रति खोलीं कि इस भेदभाव से लड़ना ही होगा . . . उसे लड़ कर हराना होगा।"

1999 में लिटिल रॉक के सभी नौ छात्र-छात्राओं को कांग्रेशनल मेडल प्रदान किया गया। राष्ट्रपति क्लिंटन ने कहा कि "उन्होंने इसकी कीमत चुका दी थी।"





थरगुड मार्शल

(1908-1993)

थरगुड मार्शल बॉल्टीमोर, मेरीलैण्ड में पैदा हुए थे। उनका नाम उनके दादा के नाम पर रखा गया था। उनके दादा एक आज़ाद किए गए गुलाम थे, जो नागरिक युद्ध में लड़े थे। थरगुड की माँ स्कूल में शिक्षिका थीं और पिता वेटर। उन दोनों का विश्वास कड़ी मेहनत और अच्छी शिक्षा में था। जब थरगुड मार्शल ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के लॉ स्कूल में दाखिला लिया, उनकी माँ ने उनके खर्चों में मदद करने के लिए अपनी सगाई और शादी की अंगूठियों को बेच दिया।

वकील बनने के कुछ ही समय बाद मार्शल नैशनल एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ कलर्ड पीपल (एनएएसीपी) की कानूनी टोली से जुड़े। 1935 में उन्हें पृथक्करण के मामले में अपनी पहली जीत हासिल हुई। इस मामले के फैसले से एक अफ्रीकी-अमरीकी छात्र को मेरीलैण्ड विश्वविद्यालय के लॉ-स्कूल में प्रवेश मिल सका। 1940 में उन्होंने अमरीका की सबसे बड़ी अदालत में लड़े गए बत्तीस मामलों में से पहला मामला लड़ा। इन बत्तीस मामलों में तीन मामलों के अलावा उन्हें सभी में जीत हासिल हुई!

1952 के आरंभ में थरगुड मार्शल ने ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एज्युकेशन मामले में स्कूली पृथक्करण को चुनौती दी। इसमें मसला अमरीकी संविधान के चैदहवें संशोधन का था, जिसमें यह गारंटी दी गई थी कि हरेक नागरिक को "कानूनों के तहत एक समान सुरक्षा दी जाएगी।" मार्शल ने अदालत में कहा कि कालों और गोरों के अलग-अलग स्कूल समान नहीं हो सकते। "समान का मतलब होता है," उन्होंने तर्क किया, "सबको समान चीज़ें, समान समय और समान स्थान पर मिलें।"

सोमवार 17 मई 1954 में सर्वोच्च अदालत ने फैसला सुनाया कि "सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में 'पृथक पर समान' के सिद्धान्त का कोई स्थान नहीं है।" थरगुड मार्शल के तर्कों ने वास्तविक समानता का द्वार खोला।

"वे ऐसे इन्सान हैं जो दुनिया को ठीक वैसे ही देखते हैं, जैसी वह है," उनकी साथी न्यायाधीश सांड्रा ओ'कॉनर ने उनके बारे में कहा, "और वे उसे धकिया कर उस दिशा में ले जाते हैं, जैसी वह बन सकती है।" वे मार्शल को "अमरीका सच्चा नायक" कहती थीं।

जेम्स मेरेडिथ

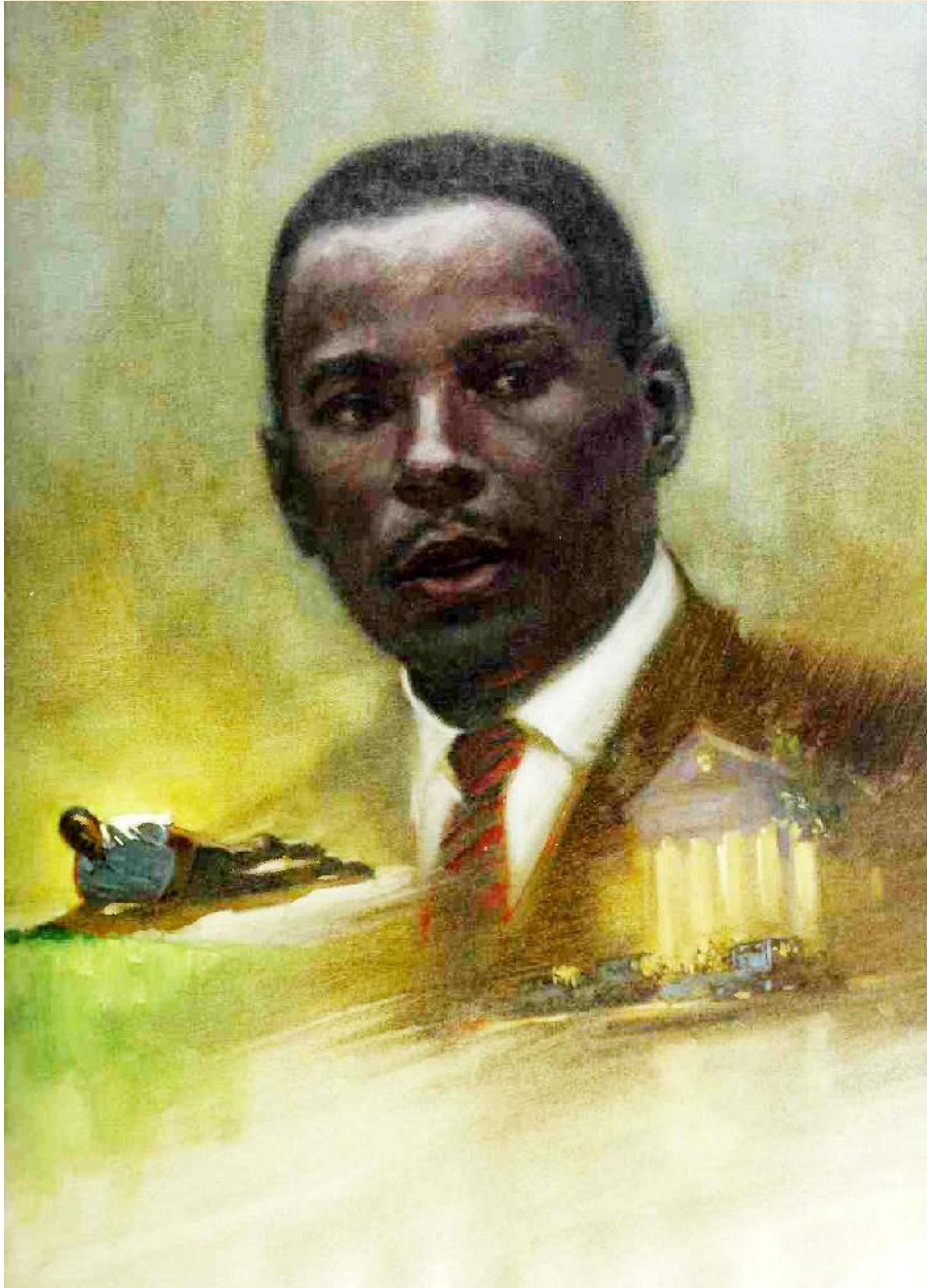
(1933 -)

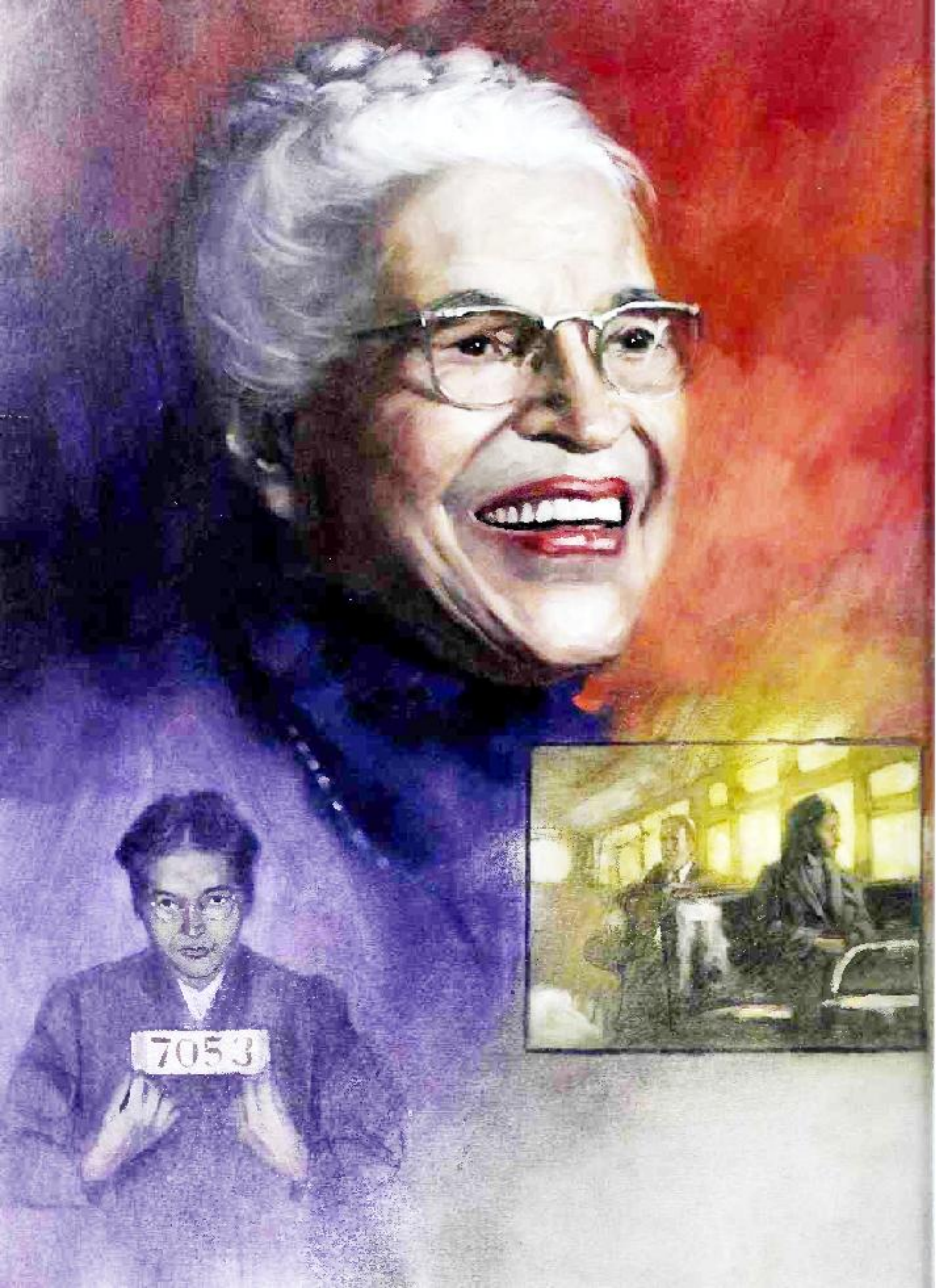
1960 में जब जेम्स मेरेडिथ दस वर्ष तक अमरीकी वायु सेना में अपनी सेवाएं देने के बाद घर लौटे, उन्होंने जैकसन स्टेट कॉलेज में दाखिला लिया। जल्द ही उन्होंने केवल गोरों के मिसिसिपी विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण का आवेदन दिया, जो एक बेहतर संस्था मानी जाती थी। उनके अंक अच्छे थे, पर चूंकि वे काले थे उन्हें प्रवेश के पहले सर्वोच्च अदालत के फैसले का इन्तज़ार करना पड़ा।

30 सितम्बर 1962 में मेरेडिथ, सैकड़ों संघीय मार्शलों के साथ 'ओल मिस' (मिसिसिपी विश्वविद्यालय) पहुँचे। उस दिन अनेकों छात्रों ने अंडे, पत्थर और बोतलें फेंकीं, गाड़ियाँ उलट दीं और उनमें आग लगा दी। मेरेडिथ अपने कमरे में सुरक्षित थे। पर तकरीबन चार सौ लोग घायल हुए और दो मारे गए। इस त्रासदायी स्वागत के बावजूद मेरेडिथ टिके रहे। अगले वर्ष पुरस्कार समारोह में न्यू यॉर्क के मेयर रॉबर्ट वैगनर ने मेरेडिथ के साहस की प्रशंसा की। "अविश्वसनीय तनाव व खतरों के सामने, असीमित समर्पण भाव को दर्शाने वाले मेरेडिथ को किसी भी छात्र से कम अंक नहीं मिलने चाहिए।"

"मैं केवल मुख्यधारा का हिस्सा हूँ," मेरेडिथ ने जवाब दिया। उन्होंने समारोह में उपस्थित लोगों को याद दिलाया कि अफ्रीकी-अमरीकी कई पीढ़ियों से अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे हैं।

अगस्त 1963 में मेरेडिथ पहले अफ्रीकी-अमरीकी थे जो 'ओल मिस' के स्नातक बन सके। "हम एक कठिन दौर में जी रहे हैं," रेवरैण्ड विलियम आर्थर पैनिंगटन ने उनके स्नातक समारोह में कहा। उन्होंने कलह के बजाय एकता, घृणा की जगह प्रेम और नाउम्मीदी के बजाय उम्मीद के लिए प्रार्थना की।





रोज़ा पार्कस्

(1913-2005)

1 दिसम्बर 1955 को रोज़ा पार्कस् मोंटगोमरी, अलबामा के क्लीवलैण्ड एवेन्यू की बस में चढ़ीं। उन्होंने अपना किराया दिया और केवल गोरों के हिस्से के ठीक पीछे वाली कतार में बैठ गईं। अगले स्टॉप पर और सवारियाँ चढ़ीं और सामने वाली कतारों की सीटें भर गईं। अगले स्टॉप पर एक गोरी सवारी खड़ी रह गई।

वाहन चालक मुड़ा और उसने पार्कस् व तीन अन्य काली सवारियों से कहा कि वे उठ जाएं, ताकि वह गोरा बैठ सके। कोई नहीं उठा।

"वे सीटें छोड़ो!" चालक चीखा।

बाकी तीन काली सवारियाँ उठ गईं। पर पार्कस् अडी बैठी रहीं।

रोज़ा पार्कस् को गिरफ्तार कर लिया गया और 5 दिसम्बर को उन्हें शहर के पृथक्करण कानूनों के उल्लंघन का दोषी पाया गया। उसी दिन मोंटगोमरी के अफ्रीकी-अमरीकियों ने सार्वजनिक बसों की सवारी करने से इन्कार कर दिया। इस बस बहिष्कार का नेतृत्व डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर, रैल्फ एबरनैथी व अन्य नेताओं ने किया। यह बहिष्कार साल भर से भी अधिक समय तक चला। 13 नवम्बर 1956 को उन्हें पहली जीत हासिल हुई। अमरीका की सर्वोच्च अदालत ने यह फैसला सुनाया कि सार्वजनिक बसों में गोरों और कालों की अलग बैठने की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए। 1 दिसम्बर 1956 से यह फैसला अमल में आया ओर रोज़ा पार्कस् फिर से बस में बैठीं। इस बार वे बस की सबसे अगली कतार में बैठीं।

"रोज़ा पार्कस् ने डॉ. किंग को अपने अहिंसक विरोध को अभ्यास में लाने का मौका दिया," स्पैटिमा क्लार्क्स ने, जो आन्दोलन की अग्रणी नेताओं में एक थीं, कहा। "रोज़ा पार्कस् ने ही यह पूरा आन्दोलन शुरू किया था।"

फ्रैड शटलवर्थ

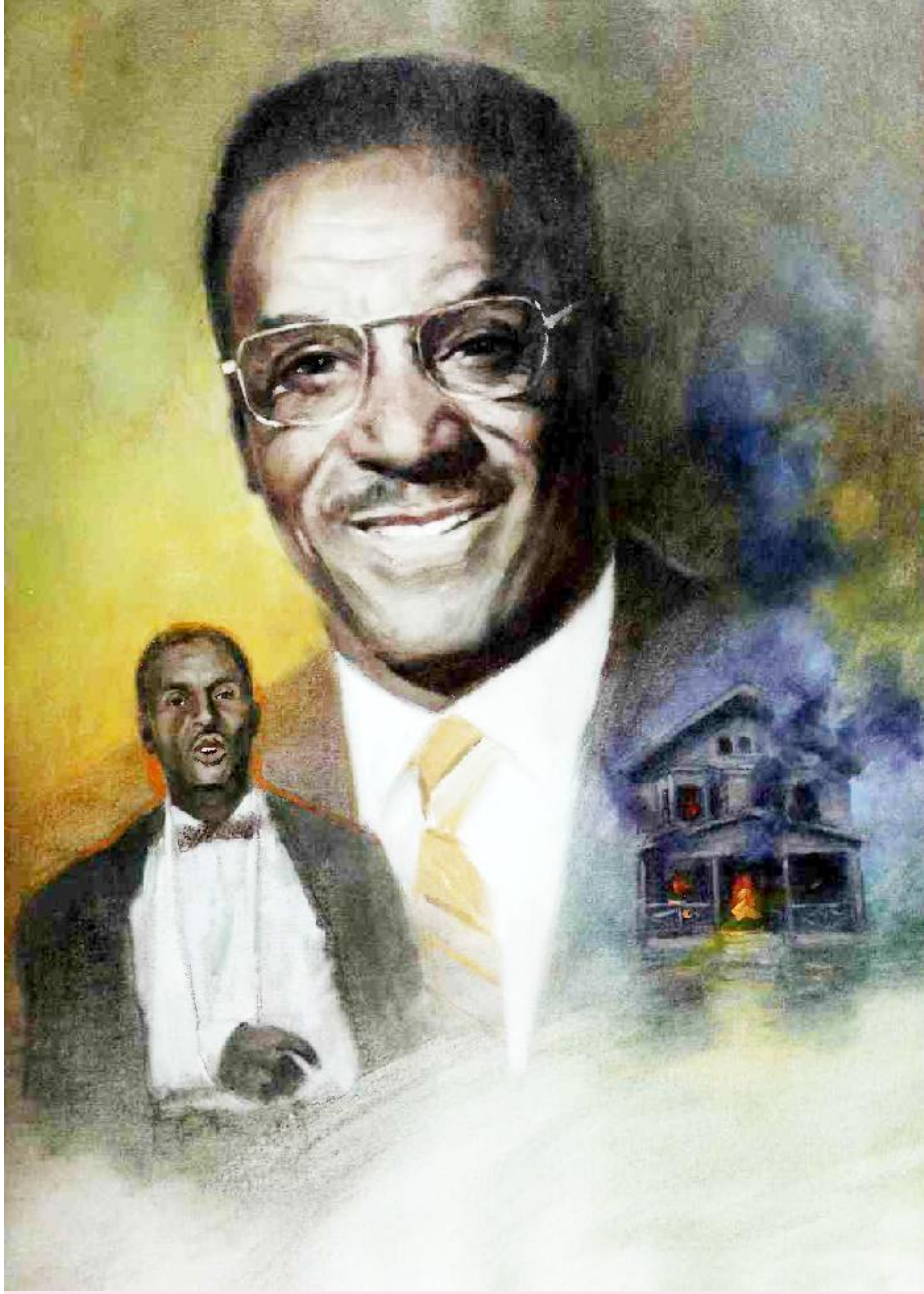
(1922-2011)

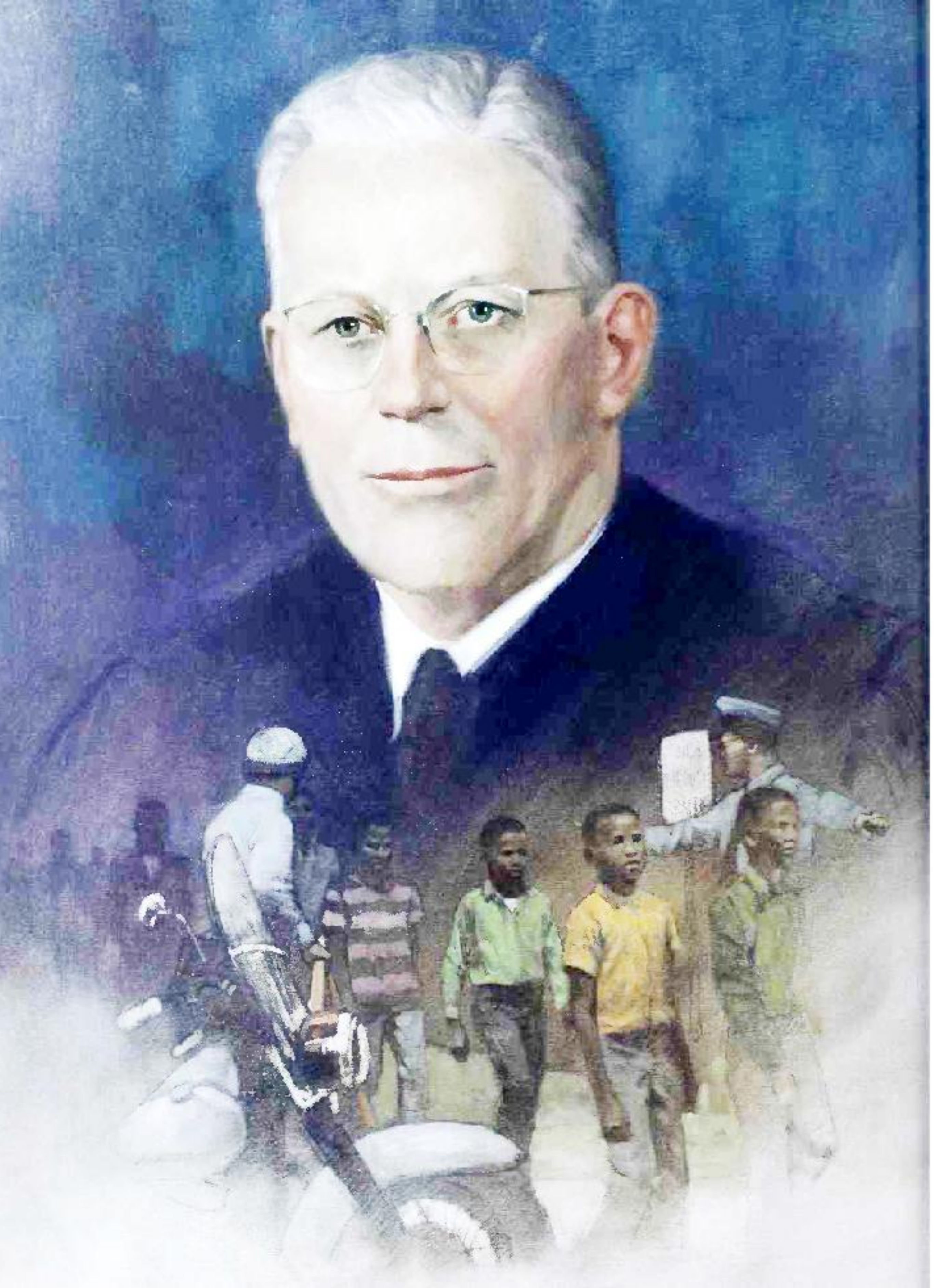
फ्रैड शटलवर्थ बर्मिंघम, अलबामा के गिरजे के पास्टर और नागरिक अधिकार आन्दोलन के सक्रिय नेता थे। नवम्बर 1956 में मोंटगोमरी बस बहिष्कार के मामले में सर्वोच्च अदालत के फैसले में कहा गया कि सार्वजनिक बसों में कालों ओर गोरों के अलग-अलग बैठने की व्यवस्था नहीं रहेगी। शटलवर्थ ने कहा कि 26 दिसम्बर को कहा कि बर्मिंघम में अफ्रीकी-अमरीकी बसों में अगली कतारों की सीटों पर बैठेंगे, जो अब तक गोरों के लिए आरक्षित थीं। उनके द्वारा घोषित समय सीमा की एक रात पहले, यानी ऐन क्रिसमस के दिन शटलवर्थ के घर पर बम फेंका गया। उनका घर तो पूरी तरह नष्ट हो गया, पर वे, उनकी पत्नी और बच्चे बच गए। इस घटना के बाद उन्हें कहा गया कि वे अपनी सुरक्षा के खातिर बर्मिंघम छोड़ दें। शटलवर्थ ने इन्कार कर दिया। "अगर ईश्वर मुझे बम से बचा सका है," उन्होंने कहा, "तो मैं पूरे समय यहीं रहूंगा।"

1957 में जब शटलवर्थ और उनकी पत्नी ने अपने बच्चों का दाखिला केवल गोरों के स्कूल में करवाना चाहा, उन्हें पीटा गया, और उनकी पत्नी को छुरा भोंका गया। पर शटलवर्थ ने हमलावरों पर पलट कर हमला नहीं किया। उन्होंने पृथक लंच काउन्टरों में कालों को सेवाएं नहीं देने के विरुद्ध बहिष्कार आयोजित करने में मदद की। उन्होंने गोरे और कालों समर्थकों के साथ 'फ्रीडम राइडस्' आयोजित कीं, जिसमें सबने मिल कर साझी बसों में अलगाववादी इलाकों में सफ़र किया।

"मुझमें विरोध करते जाने की ऊर्जा थी," शटलवर्थ ने एक बार कहा था। "डर ने मुझे कभी नहीं सताया।"

"वे हमें मार तो नहीं सकते हैं ना, डैडी?" उनकी सबसे छोटी सन्तान ने एक बार उनसे पूछा था। उन्होंने जवाब दिया, "वे हमारी उम्मीद को मार ही नहीं सकते।"





अर्ल वॉरेन

(1891-1974)

"जैसे ही हम सभी न्यायाधीश अदालत कक्ष की ओर बढ़े," मुख्य न्यायाधीश अर्ल वॉरेन ने 7 मई 1954 के बारे में बाद में लिखा, "मैंने ऐसा तनाव अनुभव किया, जैसा उससे पहले या बाद में कभी अनुभव नहीं किया था।"

तीन वर्ष पहले टोपेका, कैनसास के कई अफ्रीकी-अमरीकी परिवारों ने मुकदमा कर यह मांग की कि उनके बच्चों को एक केवल कालों के सार्वजनिक स्कूलों से स्थानान्तरित किया जाए। स्थानीय अदालत ने प्लेसी बनाम फरग्यूसन मामले का हवाला देते हुए उनके विरुद्ध फैसला सुनाया, और कहा कि पृथक पर समान सुविधाओं की व्यवस्था स्वीकार्य हैं। परिवारों ने अपील की और 1952 में दक्षिणी कैरोलाइना, वर्जीनिया, और वॉशिंगटन डी.सी. के इसी तरह के मामलों वाले लोग भी साथ जुड़े। यह मामला तब अमरीका की सर्वोच्च अदालत में पहुँचा।

1954 के उस तनाव भरे दिन सबसे बड़ी अदालत ने अपना फैसला सुनाया।

"क्या सार्वजनिक स्कूलों में बच्चों को केवल नस्ल के आधार पर पृथक करना," वॉरेन ने फैसला सुनाते समय पूछा, "बच्चों को समान अवसरों से वंचित नहीं करता है? अदालत इस बात पर एकमत है कि यह ऐसा करता है।"

जस्टिस वॉरेन इस मामले पर सोच-विचार करते समय सभी न्यायाधीशों को साथ जोड़ सके और यह फैसला सर्वसम्मति से लिया गया।

"नस्ली सद्भाव आसानी से नहीं पाया जा सकता," वॉरेन ने बाद में लिखा। "नस्ली भेदभाव का सवाल तब तक नहीं सुलझेगा जब तक उससे सही तरीके से न निपटा जाए।"

कालक्रम

1953

बैरन रोग, लुईसियाना, के अफ्रीकी-अमरीकी समुदाय ने अपने शहर की बसों में पृथक्करण के विरोध में सात दिनों तक बसों का बहिष्कार किया, और उन्हें आंशिक जीत हासिल हुई। काली सवारियों को पहली दो कतारों के सिवा किसी भी जगह बैठने की अनुमति मिली। 20-24 जून।

सर्वोच्च अदालत के मुख्य न्यायाधीश फ्रैड विन्सन की अचानक मौत हुई। उनका स्थान लेने के लिए राष्ट्रपति ड्वाइट आइज़नहावर ने अर्ल वॉरेन को उनका स्थान लेने के लिए नामित किया। 30 सितम्बर।

1954

ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एज्युकेशन मामले में सर्वोच्च अदालत ने स्कूलों में पृथक्करण के मसले पर कहा कि "समान पर पृथक" जैसा कुछ नहीं होता, छात्रों को नस्ल के आधार पर पृथक करना "स्वाभाविक रूप् से असमान है।" 7 मई।

1955

मोंटगोमरी, अलबामा में रोज़ा पार्कस् ने एक गोरी सवारी के लिए अपनी सीट छोड़ने से इन्कार किया, जो स्थानीय कानून का उल्लंघन था। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 1 दिसम्बर।

मोंटेगोमरी बस बहिष्कार, जिसका नेतृत्व मार्टिन लूथर किं, जूनियर, रैल्फ एबरनैथी व अन्य लोगों ने किया था, आरंभ हुआ। 5 दिसम्बर।

1956

13 नवम्बर को सर्वोच्च अदालत ने फैसला सुनाया कि मोंटगोमरी की बसों में अलग-अलग बैठने की व्यवस्था गैर-कानूनी है। 11 दिसम्बर को आए इस फैसले के साथ बस बहिष्कार समाप्त हुआ।

1957

आर्कन्सॉ के राज्यपाल के आदेशों पर वहाँ के नैशनल गार्डस् ने नौ अफ्रीकी-अमरीकी छात्रों को लिटिल रॉकस् सैंट्रल हाई स्कूल में घुसने से रोका। सितम्बर में राष्ट्रपति ड्वाइट आइज़नहावर ने संघ की सेना भिजवा कर स्कूल को समेकित करने का आदेश लागू करवाया।

1960

ग्रीनबरो, उत्तरी कैरोलाइना के चार अफ्रीकी-अमरीकी छात्रों ने वुल्सवर्थ के केवल गोरों के लंच काउन्टर पर धरना दिया और संकल्प किया कि जब तक उन्हें सेवाएं नहीं दी जातीं, वे वहाँ से नहीं उठेंगे। इससे प्रेरणा ले कई अन्य पृथक लंच काउन्टरों पर धरने शुरू हुए। 1 फरवरी।

1961

अन्तर्राज्यीय बसों में 'फ्रीडम राइडस्' के नाम से समेकित बसों का प्रयास आरंभ किया गया। 4 मई।

1962

जेम्स मेरेडिथ ने मिसिसिपी विश्वविद्यालय में नामांकन करवाया। 30 सितम्बर।

1963

मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने बर्मिंघम, अलबामा में वहाँ के पृथक्करण के विरोध में प्रदर्शन किया। अप्रेल-मई।

मेडगर एवर्स की जैकसन, मिसिसिपी में हत्या कर दी गई। 12 जून।

तकरीबन 250,000 लोगों ने वॉशिंगटन डी.सी. में जुलूस निकाला। डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने लिंकन स्मारक की सीढ़ियों पर खड़े हो ''मेरा एक सपना है'' वाला भाषण दिया। 28 अगस्त।

1964

संविधान के चौबीसवें संशोधन की, जिसमें चुनावों में मतदान कर हटाया गया था, राज्यों ने पुष्टि की।

एन्ड्रू गुडमैन, जेम्स चैनी, और माइकल स्वैरनर, जिन्होंने 'फ्रीडम समर' में भागीदारी की थी, उन तीनों की मिसिसिपी में हत्या कर दी गई। 21 जून।

1964 का नागरिक अधिकार कानून पारित हुआ, जिससे रोज़गार, सार्वजनिक आवासों, मतदान केन्द्रों में भेदभाव पर निषेध लगाया गया। राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन ने इस पर हस्ताक्षर किए। 2 जुलाई।

1965

सैकडों लोगों ने सेलम से मांटेगोमरी तक जुलूस निकाला ताकि अफ्रीकी-अमरीकियों का मत देने का अधिकार सुरक्षित हो सके। जनवारी से मार्च।

1965 में कांग्रेस ने मतदान अधिकार कानून पारित किया। राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन ने उस पर हस्ताक्षर किए। 6 अगस्त।

1966

एडवर्ड डब्ल्यू. ब्रुक को मैसाच्युसैटस् से सिनेट के लिए चुना गया। 1880 के बाद वे पहले अफ्रीकी-अमरीकी थे जिन्होंने सिनेट में अपनी सेवाएं दीं। 1 नवम्बर।

1967

राष्ट्रपति जॉनसन ने थरगुड मार्शल को सर्वोच्च न्यायालय के लिए नामित किया। 13 जून।

1968

डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर की हत्या मैम्फिस, टैनेसी में कर दी गई। 4 अप्रेल।

डेविड ए. एडलर दो सौ से भी अधिक बाल पुस्तकों के लोकप्रिय लेखक हैं, इनमें *हीरोस् ऑफ रेवोल्यूशन* तथा *एनेमीस् ऑफ स्लेवरी* भी शामिल हैं। वे अपने परिवार के साथ न्यू यॉर्क राज्य में रहते हैं।

बिल फर्नसवर्थ विगत पच्चीस वर्षों से बाल पुस्तकों के लिए चित्र बनाते रहे हैं। वे अपनी विषयवस्तु की विस्तृत शोध करते हैं। सूज़न गोल्डमैन रूबिन की रचनाओं: *अ फ्लैग विद फिफ्टी-सिक्स स्टरर्स; अ गिफ्ट फ्रॉम द सरवाइवर्स ऑफ माउथहाउसन* के लिए बनाए उनके चित्रों को अद्भुत कहा गया था। वे अपने परिवार के साथ फ्लॉरिडा में रहते हैं।